महिला स्वयं सहायता समूह द्वारा उद्यमिता विकास

पूनम जयंत सिंह*, अखिलेश कुमार मिश्र** और **अभिजीत श्रीवास्तव*****

"'प्रणालीगत डिजाइन' नवाचार का प्रयोग सीमांत महिला समुदाय को प्रभावी व आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए किया गया है। इसमें आसपास के क्षेत्रों में पाये जाने वाले कच्चे माल से उपयोगी उत्पादों के निर्माण से इन्हें आजीविका प्रदान की गयी। इस प्रक्रिया में उनकी कला को परखकर व उन्हें और उन्नत बनाने हेतु दो प्रायोगिक केस स्टडीज का इस्तेमाल किया गया। स्थानीय रूप से उपलब्ध मृदा और चिकन कढ़ाई (कपड़े पर धागे द्वारा रूपांकनों के निर्माण करने की एक पारंपरिक कला) लखनऊ की जीआई टैग प्राप्त है तथा कुछ अन्य सहायक सामग्रियों की पहचान की गयी। इस प्रकार निपुणता की पहचान कर समाज के शैक्षिक, सरकारी, गैर-सरकारी, वित्तीय व व्यावसायिक संस्थाओं को एकत्रित करके एक प्रणालीगत तरीके से महिलाओं का सशक्तिकरण किया गया।"

महिलाओं को सरकारी अनुदान से सहायता प्राप्त करने की सलाह दी जाती है। इससे उनकी वित्तीय क्षमता में वृद्धि हुई। इस प्रकार महिलाओं की उद्यमशीलता बढ़ाने पर ध्यान केन्द्रित किया गया। महिलाएं साक्षर थीं, सिलाई कर सकती थीं, लेकिन अपने घरों के आसपास काम करती थीं। एक सामुदायिक स्थान, सिलाई के लिए सिलाई मशीन और अन्य संसाधनों की भी इस क्रम में आवश्यकता थी।

*वरिष्ठ वैज्ञानिक; **सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी; ***यंग प्रोफेशनल-2, भाकृअनुप-राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

प्रायोगिक विश्लेषण

दो प्रयोग किए गए, एक पकी हुई मृदा से और दूसरा जूट और लखनऊ की पहचान चिकन कढ़ाई द्वारा। दोनों ही प्रयोग पर्यावरण अनुकूल और टिकाऊ उत्पाद प्रणाली को बढ़ावा देने वाले थे। परियोजना की शुरुआत वर्ष 2017 में हुई थी। इसमें महिलाओं के साथ बातचीत एवं मासिक बैठकों में दर्शक बनकर भाग लिया गया। विचार यह किया गया था कि उपलब्ध संसाधनों में क्या किया जा सकता है। अनेक उपयोगी उत्पाद डिजाइन किए गए जिनके ऑर्डर मिलने लगे। बेराजगार महिलाओं को अब काम मिलने लगा था। सरकारी कार्यक्रमों के लिए उनके इवेंट प्रबंधकों द्वारा आवश्यकताओं के अनुसार एसएचजी द्वारा हस्तनिर्मित वस्तुओं की आपूर्ति से बिक्री में पर्याप्त वृद्धि हुई।

सामुदायिक सह-सृजन द्वारा डिजाइन में सहयोग

महिला एसएचजी की प्रमुख समस्या एसएचजी निधि में संचित वित्त का उपयोग करने के लिए कार्य प्राप्त करना था, जिसमें सामुदायिक सह-सृजन की उम्मीद थी। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा मान्यता प्राप्त सामुदायिक स्वैच्छिक संगठन

से आर्थिक मदद प्रदान की गई, जिसका मुख्य उद्देश्य आजीविका सृजन के माध्यम से वित्तीय सशक्तिकरण करना था। महिलाओं के साथ विचार-मंथन करके प्रणालीबद्ध डिजाइन में सहयोग मिला।

डिजाइन रणनीति तथा इनक्यूबेशन सेंटर

विचार-मंथन के बाद प्रत्येक चरण में महिला उद्यमियों की समस्याओं का समाधान ढूंढने, आवश्यकता आधारित उत्पादन आदि डिजाइन रणनीति की महत्वपूर्ण भूमिका थी। शून्य प्लास्टिक उपयोग पर सरकार की पहल से कार्यालयों ने प्लास्टिक विकल्पों की तलाश शुरू कर दी थी। यहां उत्पाद आपूर्ति का अवसर मिल गया। डिजाइन किए गए उत्पादों के लिए यह बिल्कुल नया बाजार मिल गया। इससे शहरी कार्यालय स्थानों में ग्रामीण उत्पादों की पहुंच में मदद मिली। इनक्यूबेशन सेंटर में डिजाइन और उत्पाद-उन्मुख प्रशिक्षण दिया गया, जिसके उत्साहवर्धक परिणाम प्राप्त हुए।

परियोजना से कई अन्य शाखाएं भी निकलीं और उन्हीं पर कार्य किया गया था। एक शाखा टेरारियम डिजाइनिंग थी, जिसके लिए आधार सामग्री के रूप में ईंट भट्ठा कच्चे माल की तरह उपयोग हुआ। टेराकोटा के छोटे-छोटे खिलौने, जिनकी बिक्री बाजार में केवल त्यौहारों के दौरान होती थी, पारंपरिक रूप से बनाए गए। मिट्टी के खिलौनों, पौधों, बर्तनों के ढक्कन और जूट प्लांटर्स में उपयोग के लिए पके हुए मृदा के गोलों का उपयोग करने का एक नया तरीका विकसित किया गया। एसएचजी को मिनी बिजनेस मॉडल के रूप में ढालने के लिए सामाजिक, सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के सहयोग की आवश्यकता थी। इस अध्ययन ने एक सामाजिक इकाई के रूप सभी धर्म, जाति और उम्र की महिलाओं को साथ में लाने और उन्हें सशक्त करने में एक प्रमुख भूमिका निभाई। ■

केस स्टडी 1: बेक्ड क्ले मोटिफ्स और फिश स्केल

गांव में मिट्टी मुफ्त मिलती है, जिससे महिलाएं खाना बनाने के लिए परंपरागत रूप से चूल्हा बनाती थीं। महिलाओं ने अनूठे मृदा के गोले और रूपांकनों का निर्माण किया, जिनका उपयोग मृदा के बर्तनों और टेरारियम को सजाने के लिए किया जा सकता है। ये वस्तुएं कुछ महीनों तक चल सकती थीं। भाकृअनुप-राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो ने एक्वैरियम फिल्टर और मछलियों के लिए सब्स्ट्रेट परीक्षण के लिए मिट्टी के गोले भी खरीदे।

केस स्टडी 2: जूट के साथ पारंपरिक चिकन का काम

एक अन्य प्रणालीगत डिजाइन प्रयोग शुरू किया गया, जिसमें कच्चा माल जूट, स्थानीय शहरी बाजार में उपलब्ध था। वहां महिलाएं 'चिकनकारी' कला में कुशल थीं। सरकार ने कौशल विकास योजना से उद्यमिता को बढ़ावा दिया। उत्पादों की मांग को पूरा करने के लिए महिला एसएचजी को शहरी कार्यालयों से जोड़ने हेतु कार्यशालाएं आयोजित की गयीं। 'एक जिला एक उत्पाद' के तहत सुंदर फाइल, फोल्डर और छोटे बैग भी तैयार किए गए। ये उत्पाद 'खाद्य और कृषि संगठन' के प्रतिनिधियों की कार्यशालाओं, किसान प्रशिक्षण और भाकृअनुप के संस्थानों के कार्यक्रमों के लिए खरीदे गए। इसमें सरकारी योजना 'उद्योग आधार' ने भी सहायता की।

लेखकों से अनुरोध

आज सूचना प्रौद्योगिकी के बदले हुए कदमों को हमारे पाठक और लेखक दोनों ने पहचाना है। पाठकगण लेखकों से सीधी बात कर सकें। इसलिए हम चाहते हैं कि सभी लेखक अपने लेख पोर्टल epatrika.icar.org.in में भेजने के साथ अपना ई-मेल पता तथा मोबाइल नम्बर अवश्य दें।

-संपादक